भाषा विज्ञान की उपयोगिता-

 भाषा विज्ञान अनेक दृष्टियों से हमारे लिए बहुत उपयोगी है। इस दिशा में पहली बात तो वही कही जा सकती है जो प्रायः सभी विज्ञानों पर लागू होती है अर्थात् यह हमारी ज्ञान पिपासा को मिटाता है। भाषा मनुष्य की उच्चतम उपलब्धि है। मनुष्य ने किसी भी दिशा में जो कुछ भी किया है उसका मूल श्रेय भाषा को ही है। यदि भाषा न होती तो न तो हमारा चिंतन संभव था और न चिंतन का आदान-प्रदान। फिर हम शायद आज भी वहीं होते जहाँ पशु-पक्षी हैं। ऐसी महत्त्वपूर्ण उपलब्धि के बारे में हममें जिज्ञासा स्वाभाविक भाषाविज्ञान भाषा की उत्पत्ति, उसके विकास, भाषा-विशेष के उद्भव एवं विकास तथा प्रयोग आदि के बारे में हमारी जिज्ञासा को शांत करता है।

 भाषा शिक्षण - मनुष्य जिज्ञासु प्राणी है। वह कुछ नया करता एवं सीखता रहता है। किसी अन्य विषय को सीखा हो किसी अन्य भाषा का ज्ञान प्राप्त करना हो तो भाषा सीख कर ही किसी भी विषय का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। भाषा शिक्षण चाहे वह मातृभाषा का हो या अन्य भाषा का भाषाविज्ञान के माध्यम से हम उसे सरलता से सीख सकते हैं। इसकी सहायता से विभिन्न स्तरों की पाठ्यपुस्तकें तैयार करके तथा उच्चारण और प्रायोगिक व्यवस्था की समुचित ढंग से वैज्ञानिक शिखा देकर अपेक्षाकृत बहुत कम समय में किसी भी भाषा को ठीक से समझना तथा शुद्ध रूप से बोलना और लिखना सिखाया जा सकता है। शब्दकोशों, उच्चारण चार्टों, व्यावहारिक व्याकरणों, विदेशी भाषा शिक्षण के लिए रिकार्डों या टेपों या भाषा प्रयोगशालाओं में भाषाविज्ञान का महत्त्व सर्वाधिक है।

 बौद्धिक ज्ञान-पिपासा का परितोष - अपनी चिरपरिचित भाषा के विषय में मनुष्य के मस्तिष्क में अनेक प्रकार के प्रश्न उठते रहते हैं। मनुष्य स्वभावतः जिज्ञासु है। जब मनुष्य साहित्य अथवा व्याकरण का अध्ययन करता है तो उसके मन में अनेक प्रकार के भाव आते हैं। भाषाविज्ञान उन भावों की तृप्ति कर अनेक प्रकार की भाषा संबंधी समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करता है।

 प्रागैतिहासिक अनुसंधान - भाषाविज्ञान के अध्ययन से प्रागैतिहासिक काल की सभ्यता और संस्कृति का ज्ञान होता है, जिस काल का इतिहास प्राप्त नहीं है, उस काल की जानकारी उस समय भाषा में प्रचलित शब्दों, वाक्यों आदि के आधार पर एक सीमा तक प्राप्त हो सकती है, जिसके आधार पर उस काल की संस्कृति आदि का अनुमान लगाया जा सकता है।

 भाषाविज्ञान एवं विभिन्न शास्त्र - भाषाविज्ञान का विषय-क्षेत्र अत्यंत विशाल है। उसका संबंध एक भाषा से न रहकर विश्व की किसी भी भाषा से हो सकता है। दूसरे, उसका किसी भी काल में प्रवेश हो सकता है जिससे वह किसी भी ज्ञान को आत्मसात् करने की क्षमता रखता है; साथ ही उसका ज्ञान के अनेक विषयों से संबंध होने के कारण वह इतिहास, मनोविज्ञान साहित्य आदि की सहायता से अपने ज्ञान को वैज्ञानिक एवं तर्कसम्मत बना सकता है। जिससे ज्ञान की वृद्धि होती है।

 भाषाविज्ञान से व्याकरण का दिशा निर्देश - किस जाति, समाज या मानवता के किसी काल के मानसिक स्तर का ज्ञान हमें भाषाविज्ञान से ही प्राप्त होता है क्योंकि इसका चिर संबंध व्याकरण और साहित्य से है, जिससे इसे विश्लेषण के शब्द, वाक्य जैसे आवश्यक सामग्री और विश्लेषण के नियम आदि प्राप्त होते हैं। दूसरे, किसी भी जाति की विचार-विनिमय का साधन भाषा होने से उसके मानसिक स्तर के साथ विचारधारा का ज्ञान भी इससे होता है।

 प्राचीन साहित्य के अध्ययन में सहायता - प्राचीन साहित्य के अर्थ प्राप्ति में भाषाविज्ञान हमारी सहायता करता है। इसी प्रकार अनेक उच्चारण एवं प्रयोग ऐसे भी हैं जिनका सही प्रयोग हमारे ज्ञान के बाहर होता है और हम अर्थ का अनर्थ करने के आदी हो जाते हैं। भाषाविज्ञान इन सभी का सही उच्चारण और प्रयोग संबंधी समस्याओं का समाधान कर हमंे सही मार्ग पर अग्रसर करता है।

 विश्व-बन्धुत्व की भावना का विकास - भाषाविज्ञान मानव की दृष्टि को उदार बनाता है और उन्हंे एक-दूसरे के निकट लाने में सहायता करता है। विश्व-बंधुत्व की भावना पैदा करता है क्योंकि भाषाशास्त्री या अध्येता किसी एक भाषा से संबंधित न रहकर अनेक भाषाओं को समउदार एवं आदर की भावना से देखता है, जिससे वह देश सीमा की परिधि से दूर निकल कर विश्व में विचरण करता है जिससे मानव मात्र के प्रति भावना उसमें उत्पन्न होती है।

 भाषा विकास में सहायक - विश्व के लिए, एक सामान्य भाषा के विकास के लिए यह सहायक होता है। ऐसे एसपेरेंतो भाषा का विकास किया गया है।

 भाषा-अध्ययन में सहायक - भाषाविज्ञान विदेशी भाषा को सीखने में, उसकी ध्वनियों, उच्चारण स्थानों, शब्दों आदि का ज्ञान सुकर रूप से हमें देता है, जिससे हमें आसानी रहती है।

 अनुवाद - अनुवाद प्रयोगिक भाषा विज्ञान के अन्तर्गत ही आता है। इस दिशा में भी भाषाविज्ञान बहुत सहायक हो रहा है। मशीनी अनुवाद तो पूर्णतः भाषाविज्ञान की ही देन है। इस दिशा में अभी और भी प्रयास जारी हैं।

 लिपि सुधार - किसी भाषा के लिए लिपि-निर्धारण या नई लिपि का निर्माण भी भाषाविज्ञान की सहायता के बिना असंभव है। आशुलिपि तो पूर्णतः भाषाविज्ञान की ही देन है। लिपि-शिक्षण में भी भाषाविज्ञान में दिए गए लिपि-विश्लेषण से सहायता मिलता है। किसी भाषा के परिनिष्ठीकरण या मानकीकरण, विकास या अभिव्यंजना में वृद्धि के लिए नवशब्द निर्माण, या भाषा सुधार आदि में भी भाषाविज्ञान का योगदान महत्त्वपूर्ण है।

 शब्दकोश आदि के निर्माण में सहायक - आज किसी भाषा की वैज्ञानिक लिपि, शब्दकोश, व्याकरण आदि के निर्माण में भाषाविज्ञान पूर्ण सहायता करता है।

 तुलनात्मक अध्ययन - भाषाविज्ञान के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर आज तुलनात्मक विज्ञान का श्रीगणेश हो गया है; यहाँ तक कि अनेक धर्मों के मतों का तुलनात्मक अध्ययन होने लगा है।

 उच्चारण दोषों का निवारण - उच्चारण दोषों (हकलाना, तुतलाना आदि) को दूर करने में भी भाषाविज्ञान से सहायता ली जा रही है। इसी प्रकार टाइपराइटर में की-बोर्ड-निर्धारण, उसमें परिवर्तन, प्रेस में टाइप की व्यवस्था आदि में भी इसे बहुत उपादेय पाया गया है। इन सबके अतिरिक्त प्राचीन संस्कृति, प्राचीन भूगोल, समाजविज्ञान, मानवविज्ञान, मनोविज्ञान, साहित्य आदि विभिन्न विषयों के अध्ययन में भी भाषाविज्ञान से सहायता मिलती है।